Raga of the Month October 2022 Raga SawaniKedar

राग सावनी केदार

राग सावनी केदार दो प्रकारोंसे गाया जाता है। पहले प्रकार में केदार रागको मियाँ मल्हार की तरह मल्हार का लाग दिया जाता है। यह राग आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीकी निर्मिती है।

दूसरे प्रकार में राग केदार के साथ सावनी अंगका जोड़ दिया जाता है। यह प्रकार पंडित शंकर अभ्यंकर जी ने निर्माण किया है। पंडित शंकर अभ्यंकर पंडित नारायण राव व्यास और पंडित शंकरराव व्यास के शिष्य है; और जाने-माने सितार वादक और बंदिश कार है।

अब हम पहले प्रकार की जानकारी लेंगे। यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसमें सब शुद्ध स्वर और कोमल निषाद का अल्प प्रयोग होता है। वादी मध्यम और संवादी षड्ज तथा गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है। राग मौसमी होने के कारण वर्षा ऋतु में किसी भी समय गाया जा सकता है।

आरोह - सा, रे सा , म , म ग प, नि ध नि सां । अवरोह - सां, नि प, म, ग म प, ग म, रे,सा ।

दूसरे प्रकार के राग सावनी केदार में वादी षड्ज और संवादी मध्यम है। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है। सावनीअंग और केदार ये दोनों राग वर्षा ऋतुसे संबंधित नही है। अतः यह राग मौसमी नहीं माना जाता है।

आरोह - सा म, म ग ग प , मं प ध प म , म प सां । अवरोह - सां ध प, सां प ध म, प ग, सा म , सा रे सा।

आज के ऑडियो में हम प्रथम पंडित सुरेश बापटजी से दूसरे प्रकार के सावनी केदार की बंदिश सुनेंगे। बाद में पंडित के जी गिंडेजी ने गायी हुई - आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित मल्हार अंग के सावनी केदार की दो बंदिशे सुनेंगे।

आभार- "अभिनव गीत मंजिरी भाग ३ "; "आराधना" पंडित शंकर अभ्यंकर, पंडित सुरेश बापट, श्री अजय गिंडे, पंडित यशवंत महाले.

०१-१०-२०२२

Link to the list of 140+ Raga of the month articles -

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx